डॉ. डी. के. टकनेत देश के जाने–माने व्यावसायिक इतिहासज्ञ एवं लेखक हैं जिनका शैक्षणिक जीवन काफी प्रतिभापूर्ण रहा है। राजस्थान विश्वविद्यालय के व्यावसायिक प्रशासन विभाग द्वारा मास्टर ऑफ फिलॉसॉफी में इन्हें स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। पहली बार प्रकाशित शोध कृति पर उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई। इसके बाद, डॉ. टकनेत को कई शोध परियोजनाओं को पूर्ण करने लिए देश की अग्रणी शोध संस्थाओं, जिनमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), दिल्ली व अन्य अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्थाओं द्वारा रिसर्च फैलोशिप प्रदान की गई। उनकी चुनिंदा पुस्तकें अनूठी, पुरस्कृत व बेस्ट सेलर रहीं जिनके अलग–अलग दस से अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इन कॉफी टेबल बुक्स की प्रस्तावना, देश के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री द्वारा लिखी गई। इन पुस्तकों के शोधपूर्ण अध्ययन व रोचक शैली की अनुशंषा देश के गणमान्य केन्द्रीय मंत्रियों, राज्यसभा सदस्यों, शिक्षाविदों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, उद्योगपतियों, नीतिविदों, वरिष्ठ पत्रकारों, कुलपतियों इत्यादि ने की है साथ ही विभिन्न विख्यात दैनिक पत्रों व पत्रिकाओं में सारगर्भित समीक्षाएं भी प्रकाशित हुई हैं।

शोध एवं शिक्षण में, तीस वर्ष से अधिक का अनुभव रखने वाले डॉ. टकनेत ने व्यापार–व्यवसाय व उद्योगपतियों पर अनेकानेक लघु चलचित्र (डॉक्यूमेंटरीज) तैयार की हैं। अब तक, उन्होंने देश–विदेश के विभिन्न अग्रणी उद्योगपतियों व कंपनियो के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के साथ एक हजार से अधिक साक्षात्कार आयोजित किये हैं। साथ ही डॉ. टकनेत, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रिंट मीडिया के लिए भी लिखते रहते हैं। अनेकानेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए डॉ. टकनेत अब तक देश–विदेश की कई यात्राएं कर चुके हैं तथा अनेक जाने–माने सामाजिक व व्यावसायिक संगठनों के आजीवन सदस्य हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. टकनेत, आज भी कई अन्य राष्ट्रहित की महत्वपूर्ण शोध परियोजनाओं पर पूर्ण निष्ठा व लगन से शोधरत हैं।

गोविन्द राम जायसवाल मूल रूप से एक शैक्षिक प्रशासक हैं जिन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.एससी. एवं एम.एससी. (वनस्पतिशास्त्र) तथा विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। साहित्य में रुचि रखने वाले जायसवाल, उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित राज्य सेवा के अधिकारी हैं जो वर्ष 1998 से राजकीय सेवा में कार्यरत हैं। अपने बाईस वर्ष के सेवाकाल में इन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, भारत सरकार तथा वर्तमान में राजस्थान सरकार में कार्य कर रहें है। जायसवाल को शिक्षा, उद्योग, आपदा प्रबंधन तथा विधि मामलों का विशेषज्ञ माना जाता है। राजस्थान राजभवन द्वारा प्रकाशित *'राज्यपाल के 100 दिन'* पुस्तक का संपादन भी उनके द्वारा किया गया। जायसवाल लगभग एक दशक से श्री कलराज मिश्र से जुड़े हुए हैं। पूर्व में वह कलराज मिश्र के भारत सरकार में मंत्री रहते हुए उनके विशेष कार्य अधिकारी रहे तथा वर्तमान में राज्यपाल के प्रमुख विशेषाधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

पुस्तक के संबंध में प्रतिक्रियाएंः

कलराज मिश्र निमित्त मात्र हूँ मैं...

डॉ. डी.के. टकनेत
गोविन्द राम जायसवाल

आईआईएमई

कलराज मिश्र

निमित्त मात्र हूँ मैं...

डॉ. डी.के. टकनेत

गोविन्द राम जायसवाल

पिछले चार दशकों में विविध विषयों पर किताबें लिखने के सिलसिले में देश के अग्रणी राजनेताओं, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और उद्योगपतियों से मुझे मिलने व संवाद करने का अवसर मिला। जिनमें जे.आर.डी. टाटा, घनश्यामदास बिड़ला, धीरूभाई अंबानी, रामकृष्ण बजाज जैसे कर्मयोगी रहे तो ज्ञानयोगी के रूप में डॉ. शंकरदयाल शर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. अब्दुल कलाम, डॉ. आर.ए. मशेलकर, डॉ. एल.के. झा, डॉ. राजा जे. चलैय्या, नानी ए. पालखीवाला ने अंतर्मन को प्रभावित किया। कांची कामकोटी पीठम् के आदि शंकराचार्य ने आध्यात्मिकता की नई राह दिखाई। इन महानुभावों का प्रतिबिंब देखने को मिलता है – कलराज मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में। मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण, कार्य के प्रति निष्ठा और आत्मीय व्यवहार जैसे सद्गुणों को आत्मसात् करके ही वह एक कर्मयोगी व ज्ञानयोगी के रूप में उभरे हैं, जिनका पांच दशक का राजनैतिक जीवन इसका साक्षी है। कलराज मिश्र ने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा को न केवल पुष्पित किया बल्कि उसे पल्लवित कर समाज के सम्मुख एक आदर्श रखा है। उनके हृदय में समाज के हर वर्ग के लिए संवेदनाएं समाहित हैं, जिसके कारण वे आज भी आमजन के चहेते बने हुए हैं।

कार्यकर्ताओं के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहते हुए उन्होंने समय–समय पर अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों को प्रखरता से सार्वजनिक मंचों से उठाया। उनका स्पष्ट मत है कि 'राजनीति सत्ता सुख का नहीं बल्कि जन सामान्य के कल्याण का माध्यम है।' उन्होंने जीवन मूल्यों व सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। मानवतावादी विचारों से ओतप्रोत उनके जीवन का ध्येय सदैव जनकल्याण रहा है। कलराज मिश्र ने राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री, लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद व विधानसभा के सदस्य के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जीवन के विविध क्षेत्रों में, गौरवपूर्ण उपलब्धियों के साथ–साथ जनकल्याण की प्रबल आकांक्षा से ओतप्रोत कलराज मिश्र ने देश के विकास एवं खुशहाली को नई दिशा व गति दी। ऊर्जावान व्यक्तित्व के धनी कलराज मिश्र ने अपने राजनैतिक व सामाजिक जीवन में सदैव राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना है जिसके कारण वह अत्यंत लोकप्रिय हैं। साधारण कार्यकर्ता से कर्मयोगी बनने की उनकी यात्रा काफी संघर्षपूर्ण एवं प्रेरणादायक रही है।

आज उनके सत्कार्यों की सुगंध चारों तरफ महक रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनको बड़ा नेता बताते हुए उनके कृतित्व की तारीफ की है। 'बड़ा नेता क्या होता है और कैसा होता है, यह कलराजजी से सीखा। जब वे युवा मोर्चे का काम देखते समय गुजरात के प्रवास पर आए। उस समय मैं बहुत छोटा था और अक्सर उनके पास घंटों रहता था। तब मैंने इनका बड़प्पन देखा। ऐसे लोगों के साथ काम करते और उन लोगों को देखते हुए मैं राजनीति में आया। इन लोगों ने ही मुझे बड़ा बनाया।'

कलराज मिश्र

निमित्त मात्र हूँ मैं...

डॉ. डी.के. टकनेत

गोविन्द राम जायसवाल

कलराज मिश्र

निमित्त मात्र हूँ मैं...

डॉ. डी.के. टकनेत

गोविन्द राम जायसवाल

2020

आईआईएमई, जयपुर

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड एन्ट्रप्रन्योरशिप (आईआईएमई)
राष्ट्रीय स्तर का शोध संस्थान जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय का वैज्ञानिक व औद्योगिक शोध संगठन है।
आईआईएमई, गेट नं 1, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जवाहरलाल नेहरू मार्ग,
जयपुर–302004
मोबाइल : 9799398502 / 05 दूरभाष : 0141–2620111
ईमेल : iime.jaipur@gmail.com वेबसाइट : www.iimejaipur.org

लेखकगण
डॉ. डी.के. टकनेत
गोविन्द राम जायसवाल

प्रमुख शोधवेत्ता
सुजाता टकनेत
देवाशीष

संपादकगण
डॉ. सत्यनारायण
डॉ. राजाराम भादू
कविना त्रिभुवन

शोधवेत्तागण
संतोष निर्मल
देवर्षि शेखावत
आनन्द सोनी
राजेश कुदीवाल

छायाकार
राज चौहान

डिजाइन
मरकरी डिज़ाइन

कम्प्यूटर डिजाइनिंग
गोविन्द सिंह नेगी
नवीन गोयल

मुद्रक

आईएसबीएन
प्रथम संस्करण 2020

आवरण, साज–सज्जा तथा चित्र संपादन
आईआईएमई, जयपुर

विषय सूची

प्रस्तावना	तीन
प्राक्कथन	पांच
आभार	नौ

1. पूर्वजों की कहानी
2. पूरब की खुशबू
3. नई राहों के अन्वेषी
4. कर्मयोग के साथ ज्ञानयोग
5. व्यावहारिक आर्थिक चिंतन

समय के साथ बढ़ते कदम

काव्यात्मक उद्‌गार

विशिष्ट व्यक्तियों की सम्मतियां

नामानुक्रमणिका

प्रस्तावना

नई दिल्ली
जून 2020

श्रद्धा सुमन के रूप में अर्पित है
स्व. रामाज्ञा मिश्र एवं प्रभावती देवी
तथा
पं. रामस्वरूप द्विवेदी एवं फूलमती देवी
की पावन स्मृति को

प्राक्कथन

जयपुर पर लिखी मेरी कॉफी टेबल बुक *'जयपुरः जेम ऑफ इंडिया'* की प्रति माननीय कलराज मिश्र को भेंट करने के लिए मैं राजभवन पहुंचा। पहली ही मुलाकात में उनकी शालीनता, सहजता, आत्मीयता, सौम्यता व विनम्रता ने मुझे काफी प्रभावित किया। उनकी पोती के जन्मदिवस पर मेरा पुत्र देवांग भी मेरे साथ गया। उसने मुझे सहज भाव से कहा कि आप गवर्नर साहब पर क्यों नहीं एक किताब लिखते? मेरी पत्नी सुजाता ने भी कहा कि वर्तमान राजनैतिक माहौल में उनके जैसे व्यक्तित्व का अभाव है, जिससे समाज व नई पीढ़ी को प्रेरणा मिल सके। इसी उधेड़बुन में उनके प्रमुख विशेषाधिकारी गोविन्द राम जायसवाल व ज्ञानचंद जैन से मिला, जिन्होंने मुझे इस बात के लिए प्रेरित किया कि इनके जन्मदिवस के अवसर पर कॉफी टेबल बुक के रूप में एक सचित्र जीवनी तैयार की जाए।

मैंने जब इस जीवनी के लिए हमारी संस्था आईआईएमई, जयपुर की शोध सलाहकार समिति में प्रस्ताव रखा तो सभी ने तहेदिल से इसका स्वागत किया। संस्था के संचालक मंडल ने इस संबंध में पुनः माननीय राज्यपाल से बात करने के लिए कहा। जब मैं उनसे मिला तो उनकी संवेदनशीलता, उच्च वैचारिकता, सहिष्णुता, मृदुभाषिता व दूरदर्शिता ने मुझे काफी प्रभावित किया। ईश्वरीय प्रेरणा व सभी लोगों के सहयोग से वशीभूत होकर मैंने इस चुनौती को स्वीकार किया। कई राष्ट्रीय स्तर की शोध परियोजनाओं को पूर्ण करने व कई पुस्तकों के लेखन के कारण यह कार्य मुझे आसान प्रतीत हुआ लेकिन जैसे–जैसे उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में शोध करने लगा वैसे–वैसे आभास हुआ कि उनके संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को एक पुस्तक में समेटना गागर में सागर भरने जैसा चुनौतीपूर्ण कार्य है।

इस मिशन को मूर्त रूप देने हेतु मैंने माननीय कलराज मिश्र को साक्षात्कार देने के लिए मनाया। वे प्रारंभ से ही खुली ईमानदार आलोचना को स्वीकार करते आये हैं। खरी कहना और खरी सुनना ही अधिक पसंद करते हैं, जी–हजूरी नहीं। उन्होंने उदारतापूर्वक मुझ से कहा कि गोविन्द जायसवाल आपको जानकारी दे देंगे। धीरे–धीरे मैं उनकी सरलता और सद्भाव का कायल हो गया। उनके व्यक्तित्व की सर्वसुलभता, आध्यात्मिकता, पारदर्शिता व सादगी पूर्ण जीवन ने मुझे काफी प्रभावित किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक प्रचारक, भारतीय जनसंघ के एक संगठन मंत्री से शुरू हुई उनकी यात्रा, भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाजपा के चार बार प्रदेश महामंत्री एवं चार बार प्रदेश अध्यक्ष, लोकसभा–राज्यसभा–विधानसभा–विधान परिषद के सदस्य, उत्तर प्रदेश के सार्वजनिक निर्माण, चिकित्सा, शिक्षा, पर्यटन मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष से केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री से होती हुई, राज्यपाल के गरिमामय पद तक पहुंची है। राज्यसभा में रहते हुए वह विभिन्न समितियों के सदस्य, स्वास्थ्य सलाहकार, गृह मंत्रालय की स्थायी समिति, परिवहन मंत्रालय की स्थायी समिति, सार्वजनिक उपक्रम समिति के सदस्य रहे। सद्भावना यात्रा पर उन्होंने मिस्र, रूस, उत्तरी कोरिया, जापान, हांगकांग की यात्राएं कीं।

उनकी कर्मठता का अहसास इस बात से लगाया जा सकता है कि उत्तरप्रदेश में सार्वजनिक निर्माण मंत्री रहने के दौरान हर पांच दिन में किसी न किसी छोटे या बड़े पुल का शिलान्यास या उद्घाटन होता रहता था। उन्होंने गड्ढामुक्त सड़क योजना, दीन दयाल उपाध्याय सड़क संपर्क योजना को क्रियान्वित किया तथा 4,236 किलोमीटर लंबे राजमार्ग का निर्माण करवाया। उनके मंत्री रहते हुए ही उत्तर प्रदेश को पर्यटन में 'बेस्ट परफोर्मर स्टेट इन इंडिया' का पुरस्कार तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रदान किया।

राष्ट्रीय महत्व का शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जिस पर उनके व्यक्तित्व की छाप न पड़ी हो। देश की समृद्धि के लिए उनके दूरदर्शी आर्थिक विचारों तथा जनकल्याण के नूतन एवं सफल प्रयोगों के कारण वे आज एक प्रकाश पुंज के रूप में समाज को गौरवान्वित कर रहे हैं। उनका जीवन परंपरा और प्रगति दोनों का मिश्रण है। उनके इसी बहुमुखी व्यक्तित्व को इस कॉफी टेबल बुक में विशिष्ट रूप से रेखांकित किया गया है। यह एक व्यक्ति विशेष की संघर्ष गाथा के साथ मानवीय संवेदना से ओतप्रोत उनके बहुआयामी कार्यों की पारदर्शी झलक है। अपने इसी व्यक्तित्व के कारण वे राजनैतिक सीमाओं को लांघकर आज एक पुरोधा के रूप में उभरे हैं। ऐसे सत्पुरुष समाज और देश के लिए जो कुछ भी करते हैं वह इतिहास की थाती बनकर जन–जन के लिए प्रेरणादायी हो जाता है।

एक चीनी कहावत है–'योजना एक साल की हो तो वृक्ष लगाइए और सौ साल की हो तो इन्सान बनाइए।' इसे कलराज मिश्र ने अपने जीवन में पूरी तरह चरितार्थ कर दिखाया। उन्होंने कई कार्यकर्ताओं को आवश्यक सुविधाएं और वित्तीय सहायता प्रदान कर राजनीति के क्षेत्र में उतारा। नये और युवा कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने में मदद करना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जिनको फलता–फूलता देखकर वह अत्यंत प्रसन्न होते हैं। उन लोगों की हर तरह से मदद करते हैं जो भविष्य में कुछ कर गुजरने का हौंसला रखते हों। राजनीति में वह उन गिने–चुने लोगों में से रहे हैं, जिन्होंने सैंकड़ों, हजारों कार्यकर्ताओं की मदद की, जो आज अपने–अपने क्षेत्र में अग्रणी हैं। वे कार्यकर्ताओं की मदद इसलिए भी करते हैं कि इससे चारों ओर खुशहाली फैलेगी। यदि यह एक जन, परिवार या कुछ ही घरों तक सीमित रही तो सही अर्थों में खुशहाली नहीं कहलाएगी। उनका एक ही नारा है कि अपने साथ औरों को भी बढ़ने का मौका दो और उनकी मदद करो। सब आगे बढ़ेंगे तभी देश आगे बढ़ेगा। उनकी नजर में राजनीतिज्ञ की सफलता की कसौटी मात्र राजनीति न होकर देश की समृद्धि होनी चाहिए।

उनको दुःख होता है कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी की अपूर्व उन्नति के बावजूद अभी तक जनसंख्या के एक बड़े भाग को गरीबी से छुटकारा नहीं मिला है। आदमी चन्द्रमा पर पहुंच गया लेकिन बहुत से गांवों में पीने का पानी तक सुलभ नहीं है। आधुनिक टेक्नोलॉजी के माध्यम से हम जन–जीवन को सुख–सुविधापूर्ण बना सकते हैं तथा देश में मंद गति से हो रहे आर्थिक विकास को भी तीव्र गति दे सकते हैं। इसके लिए हमें आधुनिक टेक्नोलॉजी और तौर–तरीके अपनाने होंगे तथा दूसरे विकसित देशों के अनुभवों का लाभ लेना होगा।

वे इस बात के पक्षधर हैं कि राजनैतिक दलों को केवल अपने हितों के लिए ही प्रयासरत नहीं रहना चाहिए बल्कि समाज–कल्याण के लिए भी आगे आना चाहिए। इस दिशा में राजनीति तथा व्यापार तो निमित्त मात्र हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राजनैतिक पार्टियों को सुव्यवस्थित तरीके से कार्य करने, राजनीतिज्ञों की गरिमा बढ़ाने और देश के अर्थतंत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। जब कोई उन्हें कहता है कि हम अपने भले की क्यों नहीं सोचें, तो वे कहते हैं कि आप क्या बात कर रहे हैं? जब देश आगे बढ़ेगा, तो साथ में हम सभी लोग भी आगे बढ़ेंगे। उन्होंने सदैव राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि माना है। उनका आज भी विचार है कि उद्योग की तरह राजनीति को भी परिणाम मूलक होना चाहिए। जैसे उद्योग अपने प्रयास द्वारा उत्पादन करता है, उसी तरह राजनीति के माध्यम से भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास करने तथा जन साधारण के जीवन को सुधारने की कोशिश होनी आवश्यक है।

संस्कृत की एक कहावत है–'कीर्तिर्यस्य स जीवति' अर्थात् जो लोग अपने सत्कर्मों से इस दुनिया में अपनी कीर्ति फैलाते है वे सदैव स्मरणीय बने रहते हैं। सही कहा गया है कि कुछ लोग अपने समय के इतिहास में विशिष्ट भूमिका निभाने के लिए ही पैदा होते हैं। आज उनके अनेकानेक रचनात्मक और लोक–कल्याणकारी कार्यों की सुगंध चारों ओर महक रही है। उनका धर्म, संस्कार, दर्शन, परंपरा व कार्यशैली आमजन के दुःख–दर्द और समस्याओं से गहरे जुड़े हुए हैं। दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों व आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के हितों के लिए वे सदैव समर्पित रहे हैं। उनका भारतीय संस्कृति व जनसामान्य के कल्याण में अटूट विश्वास है जिसके कारण ही उनका जीवन त्याग, कर्मनिष्ठता एवं संघर्ष की अनूठी, प्रेरणादायी एवं जीवंत कहानी है, जो वर्तमान व भावी पीढ़ी के लिए सदैव एक आदर्श व प्रेरणादायी रहेगी।

पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिए भारत के माननीय ..... का विशेष रूप से कृतज्ञ हूं। इस कृति के माध्यम से नवागत राजनीतिज्ञों के साथ–साथ समाज की नवपीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

डॉ. डी.के. टकनेत

आभार

आज भी हमारे देश में ऐसे अनेकानेक महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने सामाजिक व राजनैतिक जीवन में उच्च नैतिक जीवन मूल्यों को अपनाकर उच्च कीर्तिमान स्थापित किए हैं। श्री कलराज मिश्र उन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में एक कर्म व ज्ञानयोगी के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने संगठन व पार्टी की सीमाओं से ऊपर उठकर विभिन्न दलों के साथ अद्वितीय समन्वय बैठाते हुए जनकल्याण को प्रमुखता दी। वे जहां भी रहे उन्होंने सकारात्मक नेतृत्व प्रदान करते हुए सभी का मार्गदर्शन किया है व कर रहे हैं, जिसकी प्रशंसा सभी ने की है। उन्होंने सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा को पुष्पित व पल्लवित किया है, जिसके कारण वे जनसामान्य में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

प्रशासनिक सेवा में होने के कारण मुझे देश के अग्रणी राजनेताओं, अधिकारियों व समाज–सेवियों से मिलने का सुअवसर मिला। श्री कलराज मिश्र का व्यक्तित्व इन सबसे अनूठा व आत्मीय है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे विगत बीस वर्षों से उनके नेतृत्व में कार्य करने तथा उनके बहुमुखी व्यक्तित्व को करीब से जानने का अवसर मिला। मेरे उनके परिवार के सभी सदस्यों से अपनत्व के संबंध बन गए और वे मुझे भी अपने परिवार के सदस्य के समान मानने लगे। नाम याद रखना तथा जिसको एक बार अपना लिया उसका साथ जीवनभर नहीं छोड़ना मिश्र परिवार की थाती रही है। मुझे आज भी उन्हें जनकल्याण के कार्यों में व्यस्त रखना होता है। समझ में नहीं आता कि उनहत्तर वर्ष की गौरवमयी आयु में वे इतना अथक परिश्रम कैसे कर लेते हैं? अपने स्वास्थ्य की चिंता किए बिना वे अपने जीवन का क्षणमात्र भी व्यर्थ नहीं जाने देते। अपनी उपलब्धियों का गर्व आजतक उन्हें छू भी नहीं पाया। अपनी अनूठी कार्यशैली के कारण उन्होंने सदैव कामकाज को आदर्श, कर्तव्य और दायित्व समझकर पूर्ण निष्ठा के साथ किया।

डॉ. डी.के. टकनेत का आभारी हूं कि इस सचित्र जीवनी के लिए सहलेखक के रूप में मुझे आमंत्रित किया। वे आज देश के उन चुनिंदा लेखकों में शामिल हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर की शोध परियोजनाओं को पूर्ण किया तथा सर्वाधिक शोधात्मक व रुचिप्रद कॉफी टेबल पुस्तकों का लेखन किया है। विभिन्न विषयों पर लिखी उनकी प्रमाणिक तथा शोधपरक कृतियां, आम पाठक के लिए अनोखी, अनूठी व आकर्षण का केन्द्र रही हैं। प्रत्येक पुस्तक उनके वर्षों के शोध व कठोर परिश्रम का प्रमाण है, जो शोध की नई दिशाओं की ओर इंगित करती है। ये कृतियां समाज के सभी वर्गों में प्रशंसित तथा नवयुवकों को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभा रही हैं।

जब सभी लोग कोरोना जैसी महामारी के कारण चार–दीवारी में बंद थे, उस समय डॉ. डी.के. टकनेत के नेतृत्व में शोध संस्था आईआईएमई, जयपुर के शोधवेत्ताओं की टीम बेधड़क, तथ्यों के एकत्रिकरण व संकलन का कार्य निर्बाध गति से कर रही थी। इन सभी की पैनी दृष्टि जिस किसी विषय के निरूपण की ओर घूमी, उन्होंने उसका बारीकी से विश्लेषण किया, जो टीम के गंभीर अध्ययन व कठोर परिश्रम का परिचायक है।

मैं राजभवन व आईआईएमई के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का शुक्रगुजार हूं, जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन में सहयोग व सक्रियता दिखाई।

गोविन्द राम जायसवाल

अध्याय – 1

पूर्वजों की कहानी